|| जय गुरु नाना ||　　|| जय महावीर ||　　|| जय गुरु राम ||

संकल्प सूत्र

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

प्रधान कार्यालय : समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड,
गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)

E-mail: ho@sadhumargi.com　　Visit us: www.shriabsjainsangh.com

नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

साधुमार्गी संकल्प सूत्र

आचार्य श्री रामेश के अनुयायी साधुमार्गी श्रमणोपासक के हृदय से उद्भूत संकल्प

1. साधुमार्गी आस्था संकल्प
2. साधुमार्गी वन्दन संकल्प
3. साधुमार्गी प्रतिलाभ (भिक्षादान संकल्प)
4. साधुमार्गी प्रवचन संकल्प
5. साधुमार्गी साधु-पर्युपासना संकल्प
6. साधुमार्गी ज्ञानार्जन संकल्प
7. साधुमार्गी सामायिक संकल्प
8. साधुमार्गी प्रतिक्रमण संकल्प
9. साधुमार्गी अनुष्ठान संकल्प

साधुमार्गी आस्था संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं अरिहंत को अपना देव, आचार्य श्री रामेश को अपना गुरु एवं भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट आगम वचनों को अपना धर्म मानता/मानती हूँ।
3. मैं अपने धर्मगुरु आचार्य श्री रामेश की धारणाओं एवं मान्यताओं पर हृदय से आस्था करता/करती हूँ।
4. मैं हनुमान, दुर्गा, शिव आदि लौकिक देव-देवियों के व्रत, स्तुति, भक्ति नहीं करता/करती हूँ। परम्परा के कारण कुलदेवी, लक्ष्मी को पूजना पड़े तो उसे धर्म क्रिया न मानकर सांसारिक क्रिया मानता/मानती हूँ।
5. मैं नवकार महामंत्र पर पूरी निष्ठा रखता/रखती हूँ। पंच परमेष्ठी में समाहित गुणों के आधार पर उन्हें नमन, वन्दन करता/करती हूँ। मैं प्रतिमा पूजन नहीं करता/करती हूँ एवं तत्संबंधी बोली में भाग नहीं लेता/लेती हूँ।
6. मैं आचार्यों एवं साधु-साध्वियों के फोटो को दीवार, लॉकेट, पेन इत्यादि पर नहीं लगाता/लगाती हूँ। फोटो को साधु नहीं मानता/मानती हूँ तथा फोटो को वन्दन नमस्कार नहीं करता/करती हूँ।
7. मैं प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र की माला फेरता/फेरती हूँ तथा प्रतिदिन रामेश चालीसा का पाठ करता/करती हूँ।
8. मैं अपने गुरु एवं धर्मसंघ की निन्दा करने वाले मुनिवर्ग के सम्पर्क का भी वर्जन करता/करती हूँ।
9. मैं किसी भी धार्मिक क्रिया-कलाप को आत्मशुद्धि करने एवं सिद्ध बनने के लक्ष्य से करता/करती हूँ। मैं भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए धर्म आराधना नहीं करता/करती हूँ।
10. मैं अपने देव अरिहंत भगवान, गुरु आचार्य श्री रामेश की आज्ञा में रहने वाले साधु-साध्वियों की भक्ति बहुमान आदर करता/करती हूँ एवं पर्युपासना के लिए तत्पर रहता/रहती हूँ।

साधुमार्गी वंदन संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं नित्य प्रति उठकर आसन से नीचे उतरकर अपने गुरु आचार्य श्री रामेश को तीन बार विधिवत् वंदन करता/करती हूँ।
3. मार्ग में साधु-साध्वियों के दिखते ही मैं हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर दृष्टि वंदन करता/करती हूँ।
4. मैं ज्ञान-ध्यान सीखने के पूर्व एवं पश्चात् तीन बार तिक्खुत्तो के पाठ से वंदन नमस्कार करता/करती हूँ।
5. मैं विहार, गोचरी आदि हेतु चलते हुए साधु-साध्वियों के चरण-स्पर्श करने का प्रयास नहीं करता/करती हूँ।
6. मैं चलते प्रवचन के बीच उठ-बैठकर वंदन नहीं करने का विवेक रखता/रखती हूँ।
7, मैं ध्यानस्थ चारित्र आत्माओं के चरण स्पर्श नहीं करने का विवेक रखता/रखती हूँ।
8. वर्षा में गीला होने पर अथवा सचित्त वस्तु से स्पृष्ट होने पर मैं चारित्र आत्माओं को वंदन नहीं करने का विवेक रखता/रखती हूँ।
9. अध्ययनादि कार्य में लगे संत-महासतियों को व्यवधान न हो, इसलिए मैं दूर से ही मौन पूर्वक वंदन करने का विवेक रखता/रखती हूँ।
10. मैं वंदना करते हुए अपने हाथों को वंदनीय मुनिराज के दायीं ओर से बायीं ओर ले जाते हुए (अर्थात् सामने रही घड़ी के कांटे के अनुसार) तीन आवर्तन देता/देती हूँ एवं उनके ज्ञानादि गुणों को अपने में प्रकट करने के भाव सहित वंदना करता/करती हूँ।

साधुमार्गी प्रतिलाभ (भिक्षादान) संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूं।
2. मैं साधु-साध्वियों को निर्दोष एवं शुद्ध आहार पानी से प्रतिलाभित करने (बहराने) की भावना रखता/रखती हूं।
3. मैं प्रतिदिन भोजन के लिए बैठने के बाद कम से कम एक मिनट तक पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वियों को प्रतिलाभित करने (बहराने) की भावना भाकर ही भोजन करता/करती हूं।
4. मैं कभी स्थानक के अंदर जाकर साधु-साध्वियों को घर पधारने का आमंत्रण नहीं देता/देती हूँ, न ही भविष्य की किसी तिथि या किसी समय के लिए पहले से आमंत्रण देता/देती हूं।
5. मैं साधु-साध्वियों प्रतिलाभित करने के लिए रोज के समय से पहले/जल्दी आहार पानी नहीं बनाता/बनाती हूँ।
6. मैं साधु-साध्वियों के निमित्त रोज बनने वाले आहार पानी से ज्यादा आहार पानी नहीं बनाता/बनाती हूं।
7. मैं साधु-साध्वियों के निमित्त रोज बनने वाली चीजों से अलग नई चीज नहीं बनाता/बनाती हूं।
8. मैं साधु-साध्वियों को शुद्ध आहार-पानी से उदारतापूर्वक प्रतिलाभित कर के उनोदरी (कम खाने की) करने की भावना रखता/रखती हूँ। पुन: आहार-पानी कदापि नहीं बनाता/बनाती हूं।
9. मैं हमेशा घर में अचित्त वस्तुओं को सचित्त वस्तुओं से अलग रखने का विवेक रखता/रखती हूं तथा सहज रूप से बने हुए धोवन, चावल के धोवन आदि को शाम तक रखने का ध्यान रखता/रखती हूं।
10. मैं गोचरी के लिए पधारे साधु-साध्वियों से अस्वस्थता आदि कारण के सिवाय मांगलिक फरमाने के लिए नहीं कहता/कहती हूं, न ही उस समय गोचरी के अलावा कोई विशेष चर्चा करता/करती हूं।

साधुमार्गी प्रवचन संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मेरे गाँव-शहर में श्रद्धेय साधु-साध्वियों के विराजने पर मैं सभी श्रावक-श्राविकाओं को प्रवचन के लिए प्रेरित करना अपना कर्तव्य समझता/समझती हूँ।
3. मैं स्वयं यथासमय प्रवचन में पहुंचने का लक्ष्य रखता/रखती हूँ।
4. मैं प्रवचन में सामायिक करने का लक्ष्य रखता/रखती हूँ।
5. मैं प्रवचन स्थल के अलावा अन्य स्थल पर वस्त्र परिवर्तन करता हूँ।
6. मैं चलते प्रवचन में लोगों के बीच से चलते हुए बैठने के लिए आगे नहीं आता/आती हूँ।
7. मैं चलते प्रवचन में बार-बार 'घणी खम्मा', 'तहत्ति' आदि शब्दों का उच्चारण करके स्वधर्मियों का ध्यान भंग नहीं करता/करती हूँ।
8. मैं चलते प्रवचन में सामायिक स्वयं से पचख लेता/लेती हूँ एवं बातचीत न करके मौन रहता/रहती हूँ ताकि दूसरों को व्यवधान न हो।
9. मैं प्रवचन में श्रवण यंत्र का उपयोग नहीं करता/करती हूँ।
10. मैं प्रवचन को ध्यान से सुनता/सुनती हूँ, आवश्यक विषयों को लिखने का लक्ष्य रखता/रखती हूँ तथा उस पर मनन करके अपने जीवन को तदनुसार बनाने का प्रयास करता/करती हूँ।

साधुमार्गी साधु-पर्युपासना संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं सचित्त पदार्थों (हरी वनस्पति, सेल की घड़ी, मोबाइल आदि) को पास में न रखते हुए ही साधु-साध्वियों के पास जाता/जाती हूँ।
3. मैं मुखवस्त्रिका या रूमाल लगाकर ही साधु-साध्वियों से बात करता/करती हूँ।
4. मैं साधु-साध्वियों से धार्मिक चर्चा ही करता/करती हूँ, सांसारिक चर्चा नहीं।
5. मैं साधु-साध्वियों के उपकरण पर पैर नहीं लगाने का विवेक रखता/रखती हूँ।
6. मैं स्थानक में प्रवेश करते समय 'निसीहि-निसीहि' का उच्चारण करता/करती हूँ।
7. सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते समय या कमरे में प्रवेश करने से पूर्व में 'मत्थएण वंदामि' कहकर सूचना देने के पश्चात् ही साधु-साध्वियों की चरण सन्निधि में पहुँचता/पहुँचती हूँ।
8. किसी साधु-साध्वी की कोई गलती ध्यान में आने पर मैं विनयपूर्वक उनसे ही निवेदन करता/करती हूँ अथवा उनके सिंघाड़ापति अथवा आचार्य भगवन् को ही निवेदन करता/करती हूँ। इसके अतिरिक्त अन्यत्र उस विषय की चर्चा नहीं करता/करती हूँ।
9. मैं किसी साधु-साध्वी को युग के बहाने से संयम में शिथिलता हेतु प्रोत्साहित नहीं करता/करती हूँ।
10. मैं साधु-साध्वी की पर्युपासना करते हुए निरंतर अपने ज्ञान, साधना में अभिवृद्धि करता/करती हूँ।

साधुमार्गी ज्ञानार्जन संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं नित्य कम से कम 15 मिनट धार्मिक ज्ञानार्जन या धार्मिक पुस्तकों का पठन करता/करती हूँ।
3. मैं अपने गाँव/नगर में साधु-साध्वियों के विराजमान होने पर यथासमय ज्ञानार्जन की भावना रखता/रखती हूँ।
4. साधु-साध्वियों से ज्ञान सीखने से पूर्व मैं उन्हें विधिवत् वंदन नमस्कार पूर्वक निवेदन करता/करती हूँ कि आपके अनुकूलता हो तो मुझे ज्ञान सिखाने की कृपा करावें।
5. ज्ञान सीखते समय मैं णमोत्थु णं की मुद्रा में या सुखासन में बैठकर विनयपूर्वक ज्ञान सीखता/सीखती हूँ।
6. मैं ज्ञानार्जन के लिए आवश्यक पुस्तक, कॉपी, पेन आदि का प्रबंध स्वयं करता/करती हूँ। इसके लिए साधु-साध्वियों से नहीं कहता/कहती हूँ।
7. मैं बिना किसी समझदार बहन की साक्षी के साध्वियों से ज्ञान नहीं सीखता हूँ/बिना किसी समझदार भाई की साक्षी के साधुओं के पास ज्ञान नहीं सीखती हूँ।
8. मैं समय पर ही साध्वियों से ज्ञान सीखता हूँ अर्थात् दोपहर 11.30 बजे से 1. 30 बजे के बीच, शाम 4 बजे के बाद साध्वियों के स्थान पर नहीं बैठता हूँ। मैं समय पर ही साधुओं से ज्ञान सीखती हूँ अर्थात् दोपहर 11.30 बजे से 1. 30 के बीच, शाम 4 बजे के बाद साधुओं के स्थान पर नहीं बैठती हूँ।
9. कोई विषय समझ में नहीं आये तो मैं ज्ञानदाता साधु-साध्वियों का तिरस्कार नहीं करता/करती अपितु प्रश्न नोट करके यथासमय विशेष ज्ञानी महापुरुषों से समाधान पाने का भाव रखता/रखती हूँ।
10. ज्ञान सीखने के बाद मैं तीन बार विधिवत् वंदन करके ज्ञानदाता साधु-साध्वियों के प्रति आभार व्यक्त करता/करती हूँ कि आपने मुझे ज्ञान प्रदान करने की महती कृपा की। यह ज्ञान मुझे इन्द्रिय विजेता, कषाय विजेता बनाकर शीघ्र मोक्षपद प्राप्त करावे।

साधुमार्गी सामायिक संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं माह में कम से कम चार सामायिक करता/करती हूँ।
3. मैं सामायिक लेते समय कायोत्सर्ग में एक लोगस्स का ध्यान करता/करती हूँ।
4. मैं सेल की घड़ी देखकर सामायिक नहीं करता/करती हूँ एवं सामायिक में अन्य किसी विद्युतीय साधन का प्रयोग नहीं करता/करती हूँ। अत: बल्ब आदि के प्रकाश में नहीं पढ़ता/पढ़ती हूँ। माइक में प्रवचन नहीं सुनता/सुनती हूँ। पंखे, कूलर आदि का उपयोग नहीं करता/करती हूँ।
5. मैं सामायिक में ऊपर चादर एवं नीचे चोलपट्टक या धोती धारण करता हूँ।
6. मैं सामायिक में सफेद आसन एवं सफेद वस्त्रों का उपयोग करता/करती हूँ।
7. मैं सामायिक में दिन में देखे बिना और रात को पूंजे बिना नहीं चलता/चलती हूँ।
8. मैं सामायिक में प्रभावना का लेन-देन नहीं करता/करती हूँ।
9. मैं सामायिक में अखबार नहीं पढ़ता/पढ़ती हूँ। विकथा (सामाजिक चर्चा) भी नहीं करता/करती हूँ।
10. मैं सामायिक में शुद्धि समभाव की आराधना करता/करती हूँ एवं अपने चरम उद्देश्य का अंत:स्मरण करता/करती हूँ।

साधुमार्गी प्रतिक्रमण संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. मैं महीने में कम से कम दो बार प्रतिक्रमण करता/करती हूँ।
3. मैं प्रतिक्रमण में श्रावक सूत्र का उच्चारण ही करता/करती हूँ। प्रतिक्रमण में श्रमण सूत्र की पाँच पाटियों का उच्चारण करना अनुचित है।
4. मैं प्रतिक्रमण में खमासमणों एवं णमोत्थु णं का पाठ आसन से नीचे उतर कर करता/करती हूँ एवं वंदना भी आसन से नीचे उतर कर करता/करती हूँ।
5. साधु-साध्वियों के विराजने पर उन्हीं से मांगलिक श्रवण करता/करती हूँ एवं आसन से उतरकर खड़े रहकर मांगलिक सुनता/सुनती हूँ।
6. मैं स्थानक में साधु-साध्वियों के विराजने पर उनसे तथा न विराजने पर वर्तमान आचार्य श्री रामेश को वंदन करके प्रतिक्रमण की अनुज्ञा लेता/लेती हूँ।
7. शारीरिक अनुकूलता रहने पर मैं प्रतिक्रमण की पूर्ण विधि की आराधना करता/करती हूँ अर्थात् आलस्य न करते हुए यथास्थान खड़े रहने आदि की विधि करता/करती हूँ।
8. मैं प्रतिक्रमण के पांचवें आवश्यक में देवसिक, रात्रिक के 4 लोगस्स, पाक्षिक के 8 लोगस्स, चातुर्मासिक के 12 लोगस्स एवं सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के 20 लोगस्स का ध्यान करता/करती हूँ।
9. मैं प्रतिक्रमण को एक मुहूर्त में पूर्ण करने का लक्ष्य रखता/रखती हूँ।
10. मैं प्रतिक्रमण में पाठों के अर्थ पर ध्यान लगाते हुए भाव प्रतिक्रमण की आराधना करता/करती हूँ।

साधुमार्गी अनुष्ठान संकल्प

1. मैं साधुमार्गी श्रमणोपासक/श्रमणोपासिका हूँ।
2. आध्यात्मिक मंत्र, महामंत्र नवकार ही मेरे लिए सर्वस्व है। मैं लौकिक मंत्रों एवं स्तुतियों का पाठ नहीं करता/करती हूँ।
3. मैं सामायिक, तपस्या, जाप, भक्तामर आदि कोई भी धर्मिक अनुष्ठान कर्म निर्जरा के लिए करता/करती हूँ। कोई भी धार्मिक क्रिया भौतिक सुख-सुविधा की प्राप्ति के लिए नहीं करता/करती हूँ।
4. मैं नमस्कार मंत्र के पदों में ॐ का संयोजन नहीं करता/करती हूँ।
5. मैं वर्ष में कम से कम बारह रात्रि संवर करता/करती हूँ।
6. मैं महीने में कम से कम दो पौरुषी अथवा आठ नवकारसी करता/करती हूँ।
7. मैं वर्ष में कम से कम दो दयाव्रत अथवा एक पौषध करता/करती हूँ।
8. मैं महीने में कम से कम चार दिन पानी के अलावा सचित्त वस्तुओं का त्याग करता/करती हूँ।
9. मैं महीने में कम से कम चार रात्रि में पानी के अलावा सभी प्रकार के आहार का त्याग करता/करती हूँ।
10. मैं रोज भावपूर्वक दोहा का उच्चारण करता/करती हूँ।

आरंभ परिग्रह त्याग दूँ, बनूं मुनि अणगार।
करूं संथारा अंत में, राम गुरु चरणार।।

मैं इस संकल्प पत्र को महीने में कम से कम दो बार पढ़ने का लक्ष्य रखता/रखती हूँ।

श्री रमेश चालीसा

।।दोहा ।।

वीर प्रभु का ध्यान धर, ले संबल नानेश ।
गुरु गुण गाऊँ प्रेम से, जय जय जय रामेश ।।1 ।।
हुक्मगच्छ के नाथ हो, ज्योतिपुंज गुणधाम ।
श्रद्धायुत् श्रीचरण में, वंदन हो निष्काम ।।2 ।।

।।चौपाई ।।

जय जय राम नाम सुख कन्दा, जय जय जय भूरा कुल चन्दा ।। 1 ।।
पिता नेम के नयन सितारे, माँ गवरा के प्राण पियारे ।। 2 ।।
दो हजार नौ चैत सुहाना, सुद चौदस धारा तन बाना ।। 3 ।।
देशनोक में मंगल छाया, मरुमाटी का मान बढ़ाया ।। 4 ।।
जन्म नाम जयचन्द कहाया, पुर परिजन मन राम सुहाया ।। 5 ।।
पढ़कर जैन जवाहर वाणी, तिरे अनेकों भवि जन प्राणी ।। 6 ।।
कथा अनाथ सनाथ पढ़ी जब, धर्म शक्ति पहचानी थी तब ।। 7 ।।
मुनि बनूं गर रोग नसावें, धारा मन में परचा पावें ।। 8 ।।
फिर नानेश शरण में आये, संयम लेने को ललचाये ।। 9 ।।
पूनम संत फतह अरु मोती, हुए प्रसन्न जब चर्चा होती ।। 10 ।।
संयम पथ की करी समीक्षा, तब गुरुवर से लीनी दीक्षा ।। 11 ।।
तन की ममता दूर निवारी, मन की समता खूब निखारी ।। 12 ।।
मनोयोग से सेवा साधी, वीतराग आज्ञा आराधी ।। 13 ।।
गुरु आज्ञा में मुझको खोना, धारा जल्दी पावन होना ।। 14 ।।
जो साधक लायक बनता है, वो संघ का नायक बनता है ।। 15 ।।
बने संघ के तुम अधिकारी, फैली महिमा जग में भारी ।। 16 ।।
नाना से तुम, तुम से नाना, लगता चेहरा एक समाना ।। 17 ।।
पंचाचार पलावें पाले, मर्यादाओं के रखवाले ।।18 ।।
सकल शास्त्र के तुम हो ज्ञाता, पंडितगण भी लख हर्षाता ।। 19 ।।

।। चौपाई ।।

जय जय राम नाम सुख कन्दा, जय जय जय भूरा कुल चन्दा ।। 1 ।।
पिता नेम के नयन सितारे, माँ गवरा के प्राण पियारे ।। 2 ।।
दो हजार नौ चैत सुहाना, सुद चौदस धारा तन बाना ।। 3 ।।
देशनोक में मंगल छाया, मरुमाटी का मान बढ़ाया ।। 4 ।।
जन्म नाम जयचन्द कहाया, पुर परिजन मन राम सुहाया ।। 5 ।।
पढ़कर जैन जवाहर वाणी, तिरे अनेकों भवि जन प्राणी ।। 6 ।।
कथा अनाथ सनाथ पढ़ी जब, धर्म शक्ति पहचानी थी तब ।। 7 ।।
मुनि बनूं गर रोग नसावें, धारा मन में परचा पावें ।। 8 ।।
फिर नानेश शरण में आये, संयम लेने को ललचाये ।। 9 ।।
पूनम संत फतह अरु मोती, हुए प्रसन्न जब चर्चा होती ।। 10 ।।
संयम पथ की करी समीक्षा, तब गुरुवर से लीनी दीक्षा ।। 11 ।।
तन की ममता दूर निवारी, मन की समता खूब निखारी ।। 12 ।।
मनोयोग से सेवा साधी, वीतराग आज्ञा आराधी ।। 13 ।।
गुरु आज्ञा में मुझको खोना, धारा जल्दी पावन होना ।। 14 ।।
जो साधक लायक बनता है, वो संघ का नायक बनता है ।। 15 ।।
बने संघ के तुम अधिकारी, फैली महिमा जग में भारी ।। 16 ।।
नाना से तुम, तुम से नाना, लगता चेहरा एक समाना ।। 17 ।।
पंचाचार पलावें पाले, मर्यादाओं के रखवाले ।।18 ।।
सकल शास्त्र के तुम हो ज्ञाता, पंडितगण भी लख हर्षाता ।। 19 ।।
महाज्ञानी हैं महातपस्वी, महाध्यानी हैं महामनस्वी ।। 20 ।।
मौनी आत्म जयी कहलाते, महावीर का धर्म निभाते ।। 21 ।।
उपधि अल्प मेधावी राया, अतिशय धारी अदभुत माया ।। 22 ।।
सम्यक् श्रद्धा शक्तिमान है, श्री बहुश्रुतजी सत्यवान है ।। 23 ।।
सादा जीवन गुरुवर त्यागी, ऊँचा चिंतन जिन अनुरागी ।। 24 ।।
क्रिया चारु चरित सवाया, मानो चौथा आरा आया ।। 25 ।।

वक्ता ध्यान दें ! जहाँ भी स्टार (*) लगा है वहां विराम लेना है ।

प्रारम्भिक साधना के 9 सूत्र

(कृपया ध्यान की मुद्रा में बैठें)

1. हे चैतन्य * तू चिंतन कर कि * मैं कौन हूँ * कहाँ से आया हूँ * किसलिये आया हूँ * और क्या कर रहा हूँ ?
2. हे चैतन्य देव * तू सत्‌चित् * आनन्दघन स्वरूप ज्ञाता एवं द्रष्टा है * किन्तु कर्मबंधन के कारण * अनादिकाल से * चतुर्गति संसार में * भटकता आ रहा है * प्रबल पुण्योदय से तुझे * यह अमूल्य मनुष्य जन्म * एवं आर्यकुल आदि उत्तम संयोग * प्राप्त हुए हैं * अतः सोच * कि अब तुझे क्या करना चाहिए ?
3. हे ज्ञानपुञ्ज * ज्ञान दर्शन चारित्र आदि * आत्मगुणों के विकास * एवं परम शान्ति * अखण्ड आनन्द * की प्राप्ति हेतु * तुझे यह मानव तन प्राप्त हुआ है ।
4. हे ज्योतिर्मय आत्मन् * तू समभाव से चिन्तन कर * कि मैं क्या सोच रहा हूँ * क्या बोल रहा हूँ * मेरा सोचना * बोलना एवं चिन्तन करना * तुच्छ भाव से युक्त तो नहीं है ।
5. हे सुज्ञ चैतन्य * तू जिन भौतिक पदार्थों को ही * सर्वोपरि मानकर * उनकी प्राप्ति के लिए * असत्य, प्रपंच आदि दुष्प्रवृत्तियों में * उलझता हुआ * अमानवीय भावों में * बहता रहता है * एवं कटुवचनों के द्वारा * अनेक हृदयों को * चोट पहुँचाता रहता है * क्या यह तेरे गौरव के अनुरूप है * नहीं

प्रारम्भिक साधना के 9 सूत्र
(कृपया ध्यान की मुद्रा में बैठें)

1. हे चैतन्य ˚तू चिंतन कर कि ˚मैं कौन हूँ ˚कहाँ से आया हूँ ˚किसलिये आया हूँ ˚और क्या कर रहा हूँ ?
2. हे चैतन्य देव ˚तू सत्चित् ˚आनन्दघन स्वरूप ज्ञाता एवं द्रष्टा है ˚किन्तु कर्मबंधन के कारण ˚अनादिकाल से ˚चतुर्गति संसार में ˚भटकता आ रहा है ˚प्रबल पुण्योदय से तुझे ˚यह अमूल्य मनुष्य जन्म ˚एवं आर्यकुल आदि उत्तम संयोग ˚प्राप्त हुए हैं ˚अतः सोच ˚कि अब तुझे क्या करना चाहिए ?
3. हे ज्ञानपुञ्ज ˚ज्ञान दर्शन चारित्र आदि ˚आत्मगुणों के विकास ˚एवं परम शान्ति ˚अखण्ड आनन्द ˚की प्राप्ति हेतु ˚तुझे यह मानव तन प्राप्त हुआ है।
4. हे ज्योतिर्मय आत्मन् ˚तू समभाव से चिन्तन कर ˚कि मैं क्या सोच रहा हूँ ˚क्या बोल रहा हूँ ˚मेरा सोचना ˚बोलना एवं चिन्तन करना ˚तुच्छ भाव से युक्त तो नहीं है।
5. हे सुज्ञ चैतन्य ˚तू जिन भौतिक पदार्थों को ही ˚सर्वोपरि मानकर ˚उनकी प्राप्ति के लिए ˚असत्य, प्रपंच आदि दुष्प्रवृत्तियों में ˚उलझता हुआ ˚अमानवीय भावों में ˚बहता रहता है ˚एवं कटुवचनों के द्वारा ˚अनेक हृदयों को ˚चोट पहुँचाता रहता है ˚क्या यह तेरे गौरव के अनुरूप है ˚नहीं कदापि नहीं।
6. हे प्रबुद्ध चैतन्य ˚यह निश्चित समझ ˚कि मिथ्या श्रद्धा ˚मिथ्या ज्ञान

संघ समर्पणा गीत

संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दन-बन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियाँ, सुन्दरतम निज संघ अहा!।।1 ।।

वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गायी है।
सुर-नर वंदन करें संघ को, संघ साधना भायी है।। 2 ।।

संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।। 3 ।।

व्यक्तिवाद विद्वेष बढ़ाता, संघवाद दे प्रेम सदा।
व्यक्तिभाव को छोड़ समर्पण, संघभाव में रहें सदा।। 4 ।।

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता माने।
'संघे शक्तिः कलौ-युगे' की, सत्य भावना पहचाने।। 5 ।।

एक सूत्र कोई भी तोड़े, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दुःसंभव को भी साधे।। 6 ।।

संघ श्रेय में आत्म श्रेय है, ऐसा दृढ़ विश्वास मेरा।
संघ में मुझमें भेद न कोई, बोल रहा हर श्वास मेरा।। 7 ।।

संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया।
संघ ना होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया।। 8 ।।

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है।
भवसागर से तारणहारा, हम इसके आभारी हैं।। 9 ।।

नगर, चक्र, रथ, पद्म, चन्द्र, रवि, सागर मेरु की उपमा।
सूत्र नन्दी में संघ गौरव की, क्या कोई है कम महिमा ?।।10 ।।

प्रेम सूत्र से बंधा संघ यह, हिल-मिल आगे बढ़ते हैं।
निन्दा विकथा तज गुणीजन के, गुणगण मन में धरते हैं।।11 ।।

दूर हटा छल, छद्म, अहं को, सरल, सहज, सद्भाव धरें।
परहित हेतु तज निज इच्छा, सरल सुकोमल भाव वरें।। 12 ।।

नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी।
अपना कुछ ना सोच किया, सर्वस्व संघ पे बलिहारी।। 13 ।।

यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झोंकें जीवन, और न कुछ सूझे हमको।। 14 ।।

संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन मन जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर हमको, संघ प्राण से प्यारा है।। 15 ।।

चमड़ी कागज, खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचें भले संघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारों से।। 16 ।।

अरिहंत प्रभुवर देव हमारे, गुरु निर्ग्रन्थ मुनीश्वर हैं।
जिन भाषित सद्धर्म दयामय, नित्य यही अन्तर स्वर है।। 17 ।।

सद्गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमें भेद न कोई है।
शास्त्र-शास्त्र में जगह-जगह पर, वीर वचन भी वो ही है।।18 ।।

संघ नायक! संघ मालिक, हम सब साधुमार्ग अनुयायी हैं।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी परछाई हैं।। 19 ।।

रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोड़ें कर्मों की कारा।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गूंजे यह नारा।। 20 ।।

स्वार्थ-मान को छोड़ संघ की, सेवा जो नर करता है।
इह-परलौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य सम्पदा वरता है।।21 ।।

मंगलकामना

सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे,
यही प्रभु से अर्ज हमारी।
दीर्घायु हो युगों-युगों तक,
कहते हैं सब नर और नारी।
सेवा में गर रहे खामियाँ,
माफ हमें करना गुरुवर।
भवसागर से नाव हमारी,
पार करो आचार्य-प्रवर।
भवसागर से नाव हमारी,
पार करो रमेश गुरुवर।
भवसागर से नाव हमारी,
पार करो उपाध्याय प्रवर।
भवसागर से नाव हमारी,
पार करो सब संत-सतीवर।।

निवेदक :

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ